HINDI (HONS)-2nd SEMESTER

Topics- जयशंकर प्रसाद - पेशोला की प्रतिध्वनि/ Class-5/ Hindi Method

जयशंकर प्रसाद द्वरा रचित 'पेशोला की प्रतिध्वनि' कविता एक आख्यान गीत है। यह कविता 'लहर' काव्य संग्रह में संग्रहीत है। जिसका प्रकाशन 1933 ई. में हुआ था। कवि ने उदयपुर की पिछोला झील के किनारे बने हुए मेवाड़ महाराजाओं के महलो और झील में बने उनके प्रतिबिंबों के माध्यम से राष्ट्रीय चेतना के भाव को स्मपुष्टता प्रदान करते हुए नवजागरन, देश-प्रेम, स्वतंत्रता के प्रबल भाव, जातीय अस्मिता तथा मानव में छिपी वीरता को जाग्रत करने हेतु प्रबल राष्ट्रियता के स्वरो की व्यंजना की है। इसमें कवि भारतीय इतिहास के गौरवशाली, पराक्रमी योद्धा और वीर महाराणा प्रताप का स्मरण कर देश की वर्तमान दयनीय अवस्था पर आंसू बहाता है। प्रस्तुत कविता में मेवाड़ की गौरव गाथा सांकेतिक है। महाराणा प्रताप के देश पर आज संकट के मेघ मंडरा रहे हैं। उन्हें पुनः प्रताप जैसे युद्धवीर की आवश्कता है। आज इस वीर भूमि से वीरता कहाँ चली गयी है। आज तो चारों ओर स्तब्धता और शून्यता है। हर जगह संध्या के कलंक की कालिमा उतरी हुई है। पेशोला की उर्मियाँ शांत है, झोपड़ें विषाद के शिल्प से बने दग्ध अवसाद के सदृश्य खड़े हैं। प्रकृति ने भी उदासी की चादर ओढ़ ली है। कवि प्रश्न करता है -अस्थि मांस की दुर्बलता लेकर इस मेवाड़ में कौन ऐसा है जो छाती ऊँची करके कह सके कि लोहे से ठोंक कर और व्रज से परीक्षा कर यह परख लिया जाए कि क्या वह पिशाचों की लीला को विखेर कर चूर-चूर कर देगा और उन्हें धुल सा उड़ा देगा। कवि पुनः प्रश्न करता है -कोई बोलता क्यों नहीं ? क्या सब मर गए हैं ? क्या इस अंधड़ में ,अन्धकार के सागर में कोई पतवार थामनेवाला नहीं हैं।कवि की आशा उसी की खोज में उस क्षीण ज्योति के लिए क्षुब्ध होकर अटकी है। लेकिन कवि अंत में पुनः दुत्कार भरा आत्मीय संबोधन कर पूछता है -

गौरव की काया पड़ी माया है

प्रताप की वही मेवाड़!

किन्तु आज प्रतिध्वनि कहाँ है?"

वस्तुतः आज गौरवशाली प्रताप की प्रतिध्वनि भी सुनाई नहीं देती है। इस प्रकार प्रस्तुत कविता में कवि ने ने मातृभूमि की दुर्दशा का चित्रण कर पराधीन भारत के नवयुवकों को राष्ट्रीय भावना से उद्देलित करने की कोशिश की है। यह कविता प्रसादजी की राष्ट्रीयता

तथा देश प्रेम का सशक्त, ज्वलंत उदाहरण है। इसके द्वारा कवि ने ब्रिटिश शासन की अधीनता से देश को मुक्त कराने का भी सराहनीय प्रयास किया है।

पाठ से संबन्धित प्रश्न-उत्तर

1.पेशोला की प्रतिध्वनि कविता किस काव्य संग्रह में संग्रहीत है?

उ. पेशोला की प्रतिध्वनि कविता लहर काव्य संग्रह में संग्रहीत है।

2. कवि ने पेशोला किसे कहा है?

उ. कवि ने पेशोला 'पिछोला झील' को कहा है।

3. कविता में गहन नियति-सा किसके लिए प्रस्तुत हुआ है?

उ. कविता में गहन नियति-सा 'दुर्भाग्य' के लिए प्रस्तुत हुआ है।

4. पेशोला झील कहाँ स्थित है?

उ. पेशोला झील उदयपुर में स्थित है।

5. गौरव-सी काया किसकी पड़ी है?

उ. गौरव-सी काया महाराणा प्रताप की पड़ी है।

6. पेशोला की प्रतिध्वनि से कवि ने किसका संदेश दिया है?

उ. पेशोला की प्रतिध्वनि से कवि ने 'राष्ट्रीय प्रेम' का संदेश दिया है।

7. जयशंकर् प्रसाद के काव्य की प्रमुख विशेषता क्या है?

उ. देशप्रेम तथा राष्ट्रवाद जयशंकर प्रसाद के काव्य की प्रमुख विशेषता है।